द्वितीय अध्याय

'आलोच्य उपन्यासों का कथानक'

द्वितीय अध्याय
'आलोच्य उपन्यासों का कथानक'

प्रास्ताविक :

सुदर्शन भाटिया आधुनिक काल के कथाकार के रूप में विख्यात हैं। भाटिया जी ने विभिन्न विषयों पर अपनी लेखनी चलाई हैं। हिमाचल प्रदेश के समाचार पत्रों में उनके साहित्य की समीक्षा प्रसिद्ध हुई है। इससे स्पष्ट होता है, कि उन्होंने उपन्यास, कहानी संग्रह, ज्ञानविज्ञान, लघुकथाएँ, व्यंग्य व्यक्तित्व विकास, शिशुपालन, स्त्री शिक्षा, इतनाही नहीं बागवानी तक का साहित्य प्रकाशित कर अपने बहुआयामी व्यक्तित्व का परिचय दिया है। सुदर्शन भाटिया जीवन के कुशल चितेरे हैं। मानव मन की बारीकियों को अपने सामाजिक उपन्यासों में उन्होंने चित्रित किया है। कहानी एवं उपन्यास के क्षेत्र में उनका योगदान उल्लेखनीय है।

2.1 कथावस्तु का स्वरूप :

कथावस्तु को अंग्रेजी में 'Plot' कहा जाता है। इसका उपन्यास में अत्यंत महत्त्व होता है। यह एक महत्त्वपूर्ण तत्व है। उसे 'वस्तु', 'कथानक', 'कथावस्तु' कहा जाता है।

''कथानक का स्वरूप एक नदी की भाँति होता है। जिसमें पात्र, घटनाएँ आदि इसप्रकार सहज, पर कलात्मक ढंग से बहती जाती हैं, कि पाठक अंत में ही जाकर रूक जाता है। उपन्यासों का यह सर्वथा साधारण फिर भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण तत्व होता है, जिसमें घटनाओं जो साधारणतया आकर्षक होती है, का कुशल संगुफन होता है।''[1]

आधुनिक युग में उपन्यासों में कथानक का तत्व तो न्यून होता है। और प्राय: चरित्रों को ही अधिक महत्त्व दिया जाता है। पर यदि इस तथ्य की गहराई के साथ जाँच की जाए, तो परीक्षणोपरान्त यह निष्कर्ष प्रतिपादित किया जा सकता है कि चाहे चरित्रों को महत्त्व दिया जाए या किसी अन्य तत्व को, पर उसमें कथांश निश्चित रूप से होगा, चाहे वह कितना ही गौण क्यों न हो। वस्तुत: कथा का तत्व उपन्यास के साथ अन्योन्याश्रित ढंग से संयुक्त रहता है, और बिना किसी कथा के उपन्यास की रचना हो ही नहीं सकती।[2]

---

1. डॉ. सुरेश सिन्हा - उपन्यास शिल्प और प्रवृत्तियाँ, पृ. 43.
2. वही, पृ. 44.

"कथावस्तु की प्रधान 3 अवस्थाएँ मानी गई है - (1) प्रारंभ, (2) मध्य, (3) समाप्ति। घटना प्रधान उपन्यास में ये तीनों अवस्थाएँ क्रमबद्ध ढंग से आती है। कथानक के लिए मौलिकता, प्रबंध कौशल, संभवता, सुगठन और रोचकता आदि विशेषताएँ आवश्यक है।"[1]

2.1.2 कथानक की विशेषताएँ :- "कथानक की विशेषताओं पर विचार करते समय सबसे पहले उसकी रोचकता पर विचार करना पडता है। रोचकता और कथानक के सुसंगठन में कोई संबंध नहीं है। यह आवश्यक नहीं है कि कथानक अत्यंत सुसंगठित हो तभी उसमें रोचकता उत्पन्न की जा सकती है। प्राय: कुशल उपन्यासकार विश्रृंखलित कथानक को भी इस कलात्मकता के साथ प्रस्तुत करते हैं, कि उसमें रोचकता बराबर बनी रहती है।"[2]

डॉ. सुरेश सिन्हा ने कथानक की विशेषता स्पष्ट की है - "कथानक की औपन्यासिक संवेदना की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण विशेषता होती है। कथानक हमें लेखक के व्यक्तित्व सदृश प्रमुख वस्तु प्रदान करता है। उपन्यासकार का व्यक्तित्व उसके पात्रों, कथानक या जीवन के विविध पक्षों पर व्यक्त किए गए उसके विचारों से ही प्रस्फुटित होता है।"[3]

"कथानक की एक प्रमुख विशेषता उसकी नाटकीयता होती है। यह एक प्रकार से चित्र बनने की उस प्रक्रिया के समान है, जिसमें कुशल शिल्पी अपने अनुभवों को अपनी कला के साथ सामंजस्य कर एक चित्र में समेटकर साकार कर देता है।"[4] इस प्रकार सुसंगत रोचक कथानक उपन्यास की प्रमुख विशेषता होती है।

2.1.1 कथानक के प्रस्तुतीकरण की शैलियाँ :- "कथानक के प्रस्तुतीकरण की विभिन्न शैलियाँ है, जिन्हें उपन्यासकार अपनी आवश्यकतानुसार एवं कथानक के अनुरूप अपनाता है, जिससे वह कथानक में अधिक से अधिक अपील और प्रभाव उत्पन्न कर सके। वस्तुत: कुशल उपन्यासकार ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करता है, जिससे पाठक केवल पाठक ही नहीं रह जाता है, वह स्वयं अपने को उपन्यास का पात्र जैसा ही समझ लेता है, उसके सुख-दुख को अपना समझ लेता है और दोनों के बीच की दूरी जितनी ही कम हो जाती है, उपन्यास उतना ही सफल समझा जाता है।"[5]

---

1. डॉ. भगीरथ मिश्र - काव्यशास्त्र, पृ. 77, 78.
2. डॉ. सुरेश सिन्हा - उपन्यास शिल्प और प्रवृत्तियाँ, पृ. 45, 47.
3. वही, पृ. 45, 47.
4. वही, पृ. 48
5. वही, पृ. 53

"कथानक को प्रस्तुत करने की वर्णनात्मक शैली भी उपन्यासों में अधिक प्रचलित है। इसमें उपन्यासकार एक तटस्थ व्यक्ति की भाँति सारी घटनाओं, पात्रों के संबंध में वर्णन करता चलता है। इसमें उपन्यासकारों की विवरणात्मक प्रतिभा ही अधिक मुखरित होती है और मनोविज्ञान दर्शन या उपन्यास की अत्याधुनिक प्रणालियों से नितांत अपरिचित उपन्यासकार के लिए भी यह प्रणाली अत्यंत सहज होती है।"[1] "कथानक को प्रस्तुत करने की एक शैली पत्रात्मक है, जो अपेक्षाकृत नवीन है। इसमें कुछ चुने हुए पत्रों के माध्यम से कथानक का ताना-बाना संगुफित किया जाता है।"[2] वर्णनात्मक, विवरणात्मक शैली अधिक प्रचलित है।

"कथानक प्रस्तुत करने की एक अभिनव शैली डायरी पद्धति है। इसमें एक या दो पात्रों की डायरी के माध्यम से सारे उपन्यास की रचना की जाती है। इस शैली में प्राय: पात्रों की संख्या कम होती है। मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि पर मनोविश्लेषणात्मक शैली अपनाने वाले उपन्यासकारों की यह प्रिय शैली है, क्योंकि इसमें उन्हें अपने पात्रों के अन्तर्द्वद्व सुलझाने का स्वतंत्र अवसर प्राप्त होता है।"[3]

"कथानक प्रस्तुत करने की एक शैली चित्रात्मक (Photographic) हैं। जिसमें उपन्यासकार एक फोटोग्राफर का रूप धारण कर लेता है। और किसी स्थानविशेष के रीति-रिवाजों, संस्कृति, सभ्यता, राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों, धार्मिक रूढियों, प्रगतिशील तत्वों, नारी और पुरुष की दृढ इच्छाओं, उद्देश्यों, संघर्षों, पराजय एवं विजय, अतृप्त इच्छाओं एवं वासनाओं आदि के स्नैप-शॉट प्रस्तुत करता चलता है। इस शैली का प्रयोग आंचलिक उपन्यासों में विशेष रूप से होता है।"[4] इस प्रकार उपन्यास में अनेक शैलियों का प्रयोग किया जाता है।

"कथा के अंतर्गत कथा चयन बहुत महत्त्वपूर्ण है। उपन्यासकार को जो बात कहनी है, उसके मुताबिक सटीक कथा चुन लिया, तो बस, आधा काम तमाम। कथा का उद्देश्य ही यही है। लेखक की बात को व्यंजित व व्यक्त करने का सही माध्यम बनाना। और यह चुनाव पर आधारित है। लेखक अपनी कथा को कहीं से भी चुन सकता है - इतिहास - पुराण - जीवन या समकालीन जीवन से। इसी को कथा का स्रोत कहते हैं।"[5]

---

1. डॉ. सुरेश सिन्हा - उपन्यास शिल्प और प्रवृत्तियाँ, पृ. 56.
2. वही, पृ. 57.
3. वही, पृ. 59
4. वही, पृ. 60
5. डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी - उपन्यास विमर्श, पृ. 7.

2.2 आलोच्य उपन्यासों की कथावस्तु :

2.2.1 'कल्लो' उपन्यास की कथावस्तु :-

प्रस्तावना :- सुदर्शन भाटिया जी का 'कल्लो' उपन्यास भावना प्रकाशन, पटपडगंज, दिल्ली से सन 1995 में प्रकाशित हुआ है। सुदर्शन भाटिया जी ने अनेक उपन्यास लिखे हैं उनमें 'कल्लो' एक सामाजिक उपन्यास है। 'कल्लो' पर्वतांचल की पृष्ठभूमि में ऐसे ग्राम की कथा को उठाता है, जो परंपरागत मान्यताओं-मूल्यों को सर्वोपरि मानता है। उपन्यास में छोटी-बडी घटनाएँ अनेक महत्त्वपूर्ण प्रसंगों को कलात्मकता के स्तर पर रेखांकित करती है।

'कल्लो' उपन्यास में लेखक सुदर्शन भाटिया जी ने हिमाचल प्रदेश के गाँवों की सादगी और उच्च मान्यताओं को प्रेम कहानी के माध्यम से उजागर किया है। ग्राम सुधार के प्रति केवल सरकार पर निर्भर न रहकर भी हम बहुत कुछ कर सकते है, यह प्रस्तुत उपन्यास में दर्शाया हैं।

'कल्लो' सुदर्शन भाटिया जी की प्रथम औपन्यासिक कृति है, जो आदर्श की पृष्ठभूमि पर आधारित है। परंतु यथार्थवादी प्रसंग इसे रोचकता एवं सार्थकता प्रदान करते है।[1]

'कल्लो' उपन्यास की शुरूआत हिमाचल प्रदेश के एक गाँव से होती है। उस गाँव में एक युवक और कल्लो नामक एक ग्रामीण लडकी शाम के समय दोनों घूमने जाते हैं। युवक को कली 'परदेसी' के नाम से पुकारती है। परदेसी युवक कली के घर का मेहमान है। वह गाँव सुधार के लिए हर एक गाँव में जाता है। वहाँ का काम पूरा हो जाने पर वह दूसरे गाँव जाता है। इस तरह वह एक दिन कली के गाँव पहुँचता है। कली उस गाँव की भोली भाली तथा सीधे-सादी लडकी है। युवक कली के घर ठहरता है। कली के मन में युवक के प्रति प्रेम पनपता है। लेकिन युवक उससे कहता है, कि ''मैं तुम्हें मेरे साथ नहीं ले जा सकता। मेरा कोई घर नहीं, मेरा कोई गाँव नहीं। मैं तो बेघर हूँ, बेचारा। उडता हुआ पंछी। न ठौर न ठिकाना। न घर न बार। मैं तो चलता-फिरता पानी हूँ। रुकना मुझे पसंद नही। जब मेरा ही कोई ठिकाना नहीं, घर नहीं, तो मैं तुम्हें कहाँ ले जाऊंगा। मैं तुम्हें कहा रखूँगा। तुम मेरे साथ नहीं जा सकोगी। कल्लो मैं तुम्हें बेघर नहीं करना चाहता।''[2]

---

1. डॉ. सुशील कुमार फुल्ल - दैनिक ट्रिब्यून, .
2. सुदर्शन भाटिया - कल्लो, पृ. 10.

"उसी शाम युवक एक चश्में पर एक हाथ-पाँव धोने गया। तब वहाँ उसे एक बालक के चिल्लाने की आवाज आयी। युवक उस आवाज की ओर भागता है, तब उसे पता चलता है, कि उस बालक को एक भेडिया उठाकर ले चला है। युवक ने बालक के पास की लाठी उठाई और उस भेडिए को मार गिराया। तब गाँव के सब लोग उससे बेहद खुश हुए। उसी दिन शाम के समय 3-4 गाँवों के प्रधान पंच आदि इकट्ठे होकर उन्होंने ग्रामक सुधार के लिए युवक से सहायता करने को कहते हैं। लोगों के बहुत समझाने और मनाने के बाद युवक रूकने के लिए तैयार हो जाता है।"[1]

गाँव के नम्बरदार का बेटा कैलाश जो मण्डीनगर कॉलेज में पढ़ता है। वह कली को प्राप्त कर लेने की सोचता है। छुट्टियाँ लगने पर वह गाँव आता है और कली के घर में युवक और उसके पिता को न देखकर वह उसकी इज्जत लूटने की सोचता है। वह उसके घर में घुस जाता है और उस पर बलात्कार करने की कोशिश करता है, तभी वहाँ युवक आ पहुँचता है। युवक के आते ही वह वहाँ से चला जाता है। युवक चाहता तो वही उसे मार भी देता, लेकिन वह कानून को मानता था। दूसरे ही दिन युवक ने चौधरी साहब से बिना किसी का नाम लिए कहता है, कि "गाँव का एक लड़का हमारे ही गाँव की एक लडकी की अस्मत लूटने की कोशिश करे तो उसे क्या दंड मिलना चाहिए?"[2]

चौधरी यह प्रश्न सुनकर पहले तो मुस्कुराते है, फिर बोलते है, कि "मेरे गाँव में किसकी मजाल किसकी हिम्मत जो किसी बेटी पर गाँव की लड़की पर आँख उठा सके?"[3] क्योंकि तुमने प्रश्न किया है तो उत्तर भी देना जरूरी है। "मैं उस लड़के को घास में जीवित जला दूँगा।"[4] तब युवक कहता है, कि आपके ही बेटे ने किशनू की बेटी कली की अस्मत लूटने की कोशिश की है। यह सुनते ही चौधरी का चेहरा लाल होता गया। उनके क्रोध की कोई सीमा न थी। उन्होंने अपने बेटे से पूछा - "बेटा, यह गलती तुम से हुई .... हुई या नहीं, सच बोलो।" "जी!" कैलाश के काँपते होंठ खुले।"[5]

---

1. सुदर्शन भाटिया - कल्लो, पृ. 21.
2. वही, पृ. 52.
3. वही, पृ. 52.
4. वही, पृ. 52.
5. वही, पृ. 54.

यह सुनकर चौधरी अपने बेटे को घास में जीवित जला देने की सजा सुनाते हैं। अपने ही बेटे से ऐसा व्यवहार देखकर गाँव के सभी लोग उन्हें रोकते हैं और उन्हें उससे कम सजा देने को कहते हैं। तब वह उसे उसके कपडे उतारकर उसके पूरे शरीर पर गुड का लेप लगा दिया और उसे चींटियों के आगे फेंक दिया गया। चींटियों ने कैलाश के शरीर को गुड खाते-खाते नोंचना भी शुरू कर दिया। कैलासश तडपने लगा। वह रोने और चिल्लाने लगा। उसके पिताजी ने उसे दो घंटे तक इसी हालत में रखा। धीरे-धीरे कैलाश बेहोश-सा हो गया। कैलाश तडपने लगा, बिन पानी मछली की तरह। ठीक दो घंटे बाद कैलास के हाथ-पाँव खोल दिए गए और चौधरी ने कली को बुलाया और उन्होंने उससे क्षमा माँगते हुए कहा - 'बेटी ! मुझे क्षमा कर देना। मेरी संतान से तुम्हें बहुत दुख उठाना पडा।' फिर कैलाश को संबोधन करके बोले - 'उठो , बहिन से क्षमा माँगो।'[1] तब कैलाश कली को अपनी 'बहिन' कहकर उससे क्षमा माँगता है। तब चौधरी युवक से कहते है - ''बाबूजी ! मैं आपका किन शब्दों में धन्यवाद करूँ। ... जब से आप आए है, प्रतिदिन, गाँव की एक न एक बुराई को समाप्त करने में लगे है। कोई न कोई समस्या आपके हाथ आने लगती है, और निडर होकर उसे निपटाते हैं। ..... कितना अच्छा है। हमारे गाँव अवश्य सुधरेंगे। वह दिन समीप ही है जब हम इन्हीं गाँवों में स्वर्ग देखेंगे, ... राम राज्य पाएँगे..... ।''[2] इस प्रकार चौधरी युवक को धन्यवाद देते हैं।

लेकिन कैलाश के मन में युवक के प्रति बदला लेने की भावना थी। कैलास पच्चीस-तीस दिनों से गाँव में हीं था, किंतु घर से बाहर न निकल सका। वह पश्चाताप की अग्नि में झुलसा जा रहा था। युवक एक-दो बार कैलाश के पास गया। उसके पास बैठा, उससे बात करनी चाही, पर कैलाश ने कोई उत्तर नहीं दिया। युवक के जाते ही कैलाश के मन में युवक को खत्म करने की बात आती। उसके दिमाग में कई स्कीमें आती, तरीके खोजता बदला लेने की। कुछ दिन बाद वह अपने कॉलेज में जाता है। वहाँ जाकर उसने सारा वृत्तांत अपने मित्र राजेश को बताया, तब राजेश ने उससे बदला लेने की जिम्मेदारी अब मेरी है। तुम चिंता मत करो। और वे दोनों कॉलेज में जाने लगे। वहाँ शीला से मिलने पर पता चला कि शीला समाजसुधार करना चाहती है। वह कैलाश से कहती है, कि ''मिस सत्या बी. ए. प्रीवियस की छात्रा है। मिस्टर खन्ना एडवोकेट

---

1. सुदर्शन भाटिया - कल्लो, पृ. 57.
2. वही, पृ. 58, 59.

कही बेटी। प्रो. अंशु के हाथ सत्या का एक प्रेम पत्र आ गया है। वह उसे धमकी दे रहे है, कि उसका पत्र पिता को देंगे। या वह उसे स्वीकार कर ले, उसे खुश कर दे और पत्र वापिस ले ले। यह सुनते ही ''कैलाश को काटो तो खून नहीं। वह सोचता है - वह स्वयं इससे भी बुरे आचरण का मालिक है, उसका तो राम-रोम पापी है। मन, वचन और कर्म से वह गिरा हुआ है। बिगडा हुआ है। पर आज ..... हृदय परिवर्तन का समय आ गया है। वह शीला के प्रभाव में पूरी तरह आ चुका है। अपने पापों को भी धोने का स्वर्ण अवसर उसके हाथ आने लगा है।''[1] और वह शीला का साथ देता है। बाद में राजेश प्रो. अंशु से वो पत्र लेते हैं, जिससे सत्या की इज्जत बच जाती है।

''युवक गाँव सुधार के साथ-साथ शहर की एक गरीब औरत जिसका पति मर चुका है, उसका अंतिम संस्कार कराने के लिए कोई भी नहीं है, वह अकेली औरत होती है। तब युवक उसकी नि:स्वार्थ भाव से सहायता करता है। वह उसके पति का अंतिम संस्कार करता है, उस बेचारी विधवा औरत को वह रहने के लिए घर देता है। वह उसे 'बहिन' मानता है।''[2]

''युवक जब-जब नगर आता है, तब-तब वह अपनी गरीब विधवा बहिन से मिलता है। उसने नगर के तीन-चार लखपतियों, व्यापारियों, बगीचेवालों से मिलकर उनको विधवा की दुर्दशा की दर्दनाक कहानी सुनाई। उसकी बातचीत से सभी प्रभावित हुए। उसने अपने प्रयत्नों से सबसे थोडा बहुत अनुदान प्राप्त किया। और कुछ धन इकट्ठा किया। वह राशि 10,000 रु. से ऊपर थी। उसने वह सारी राशि अपनी बहिन को दे दी। अत: वह औरत युवक को आशिर्वाद देती है।''[3]

''युवक पिछली बार जब नगर आया था, तो बी. डी. ओ. साहब से न मिल सका। इसीलिए अब वह सीधा उनके कार्यालय गया। बहुत देर तक उनसे विचार-विमर्श करता रहा। गाँव के उत्थान के लिए क्या किया जा सकता है। सरकार गाँव सुधार में कैसे सहायक बन सकती है। क्या-क्या प्रावधान हो सकते है सरकारी कोष से। खेती-बाडी, नए-नए औजारों की उपलब्धि, अच्छे व स्वस्थ बीज, अच्छी उपयोगी खाद आदि की पूर्ण जानकारी लेता है तथा सड़कों और स्कूलों के लिए किस प्रकार सहायता ली जा सकती है। इस प्रकार के पूर्ण विवरण प्राप्त कर वह वहाँ से निकलता है।''[4]

---

1. सुदर्शन भाटिया - कल्लो, पृ. 90, 91.
2. वही, पृ. 42.
3. वही, पृ. 67.
4. वही, पृ. 68

''युवक की स्थान-स्थान पर चर्चा हो रही थी। क्या गाँव, क्या शहर, क्या कर्मचारी, क्या अधिकारी। नगर में जहाँ भी कोई विषय उठता, अधिकारी इस युवक का उदाहरण देते। वह कली के गाँव में अस्पताल की सुविधा, डाकखाना, स्कूल तथा दो-तीन गाँवों की सड़के मिलाकर लोगों की सुविधा करता है। वह गाँव सुधार कर सोचता है कि वह अपने दायित्व से शीघ्र मुक्त होना चाहता था। अधिक देर वहाँ रूकना भी नहीं चाहता था। उसे तो अभी आगे जाना था। कितने ही इसप्रकार के पिछडे गाँव है, वह जिन्हें उन्नति की मुख्यधारा के साथ जोड देना चाहता था।''[1] और वह अपना काम निपटाकर उस गाँव से विदाई लेना चाहता है। लेकिन वह सोचता है, कि कल्लो बिलकुल न मानेगी। कल्लो भी उसके साथ जाने की जिद करेगी। इसलिए वह सोचता है, कि रात के समय बिना किसे कहे यह गाँव छोडना है। और वह एक दिन रात के समय कली का घर छोडकर दूसरे गाँव के लिए निकल पडता है। वह जंगल में भटकता फिरता है। वहाँ उसे एक साधू मिल जाता है। वह साधू उसे पानी और चने देता है और उसे आराम करने को कहता है। बातों-बातों में युवक अपनी सारी कहानी उस साधु को बताता है, कि ''बचपन में कैसे डाकूओं ने उसे उठाकर भगाया था। बाद में उसके पिता को धन के लिए मारा। यह देखकर उसकी माँ भी अपने प्राण त्याग देती है। और युवक अकेला रह जाता है।''[2] बाद में वह किश्नु के घर रहने लगता है। लेकिन वहाँ से भी भागकर वह चला जाता है। और फिर 17-18 साल बाद फिर उसी गाँव में वापस आता है। और गाँव में सुधार करता है। अपनी यह सारी कहानी युवक उस साधु को बताकर दूसरे गाँव के लिए निकल पडता है।

''युवक दूसरे गाँव के लिए निकल तो पडता है, पर उसके मन में कली के बारे में अनेक विचार आते हैं। वह सोचता है कि कली का क्या होगा? कैलाश उससे बदला लेने के लिए उसे ही बरबाद कर दे, तब क्या होगा? उसकी चिंता बढ़ने लगी। कौन जाने कब किश्नू चाचा अपने श्वासों का हिसाब-किताब पूरा कर बैठें, फिर यह लडकी कुँवारी रह जाएगी, कौन इसकी रक्षा करेगा? कौन इसे बचाएगा ? कैसे होंगे इसके हाथ पीले ? ये सारे प्रश्न युवक के मन में आने लगे। उससे वह बहुत परेशान हो उठा। लेकिन वह अपने निर्णय पर अडिग रहा। और वह दूसरे गाँव के लिए निकला।''[3]

---

1. सुदर्शन भाटिया - कल्लो, पृ.77.
2. वही, पृ. 109.
3. वही, पृ. 124.

राजेश कैलाश के मन में युवक के प्रति प्रतिशोध की भावना भर देता है। और वे दोनों युवक को मारने के लिए गाँव में आते हैं, लेकिन गाँव में आते ही उन्हें पता चलता है कि युवक गाँव छोडकर चला गया है। इसीलिए वे लोग युवक को ढूँढने के लिए जंगल में जाते है।

''जंगल जाते समय उन दोनों को साधु मिलता है। साधु से युवक के बारे में पूछने पर पता चलता है, कि युवक जंगल में गया है।''[1] इसलिए वे दोनों युवक को ढूँढने के लिए जंगल में जाते है। ''युवक को ढूँढते समय कैलाश जंगल में एक ओर गिरता है। वहाँ युवक ही उसे बचा लेता है, तब राजेश वहाँ जाकर युवक को पिटता है।''[2] इसी बीच साधु वहाँ पिस्तौल लेकर आता है, और उसे कैलाश की छाती पर रखता है। इससे कैलाश डर जाता है। तब साधु अपनी नकली दाढी उतार देता है। तब युवक और कैलाश दोनों आश्चर्यचकित हो जाते है। वह 'कल्लो' थी। कैलाश की बहन और युवक की प्रेमिका। यही पर उपन्यास का समापन हो जाता है।''[3]

इस प्रकार 'कल्लो' उपन्यास में 'प्रेमकथा' कही गयी है। विवेच्य उपन्यास की कथावस्तु सरल एवं सुबोध है। उपन्यास का नायक युवक है। लेखक ने उसका 'युवक' नाम से ही चित्रण किया है। गाँव की भोली-भाली लड़की कल्लो युवक को 'परदेसी' नाम से पुकारती है। गाँव के विकास में जुटे हुए युवक को चित्रित कर लेखक ने यह संदेश दिया है कि नई पीढ़ी के युवक ही गाँव के सुधार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। युवक एवं कल्लो की प्रेमकथा में कल्लों के प्रति संवेदना प्रकट करने में लेखक सफल हुआ है। अपने प्रेमी को वेषान्तर कर बचानेवाली नायिका कल्लो की घटना उपन्यास के अंत में चित्रित है। इससे उपन्यास में नाटकीयता भी आयी है।

---

1. सुदर्शन भाटिया - कल्लो, पृ.125.
2. वही, पृ. 127.
3. वही, पृ. 128.

2.2.2 'सुलगती बर्फ' उपन्यास की कथावस्तु :

प्रस्तावना :- सुदर्शन भाटिया लिखित 'सुलगती बर्फ' उपन्यास राधाराणी प्रकाशक विश्वासनगर दिल्ली से 1999 में प्रकाशित हुआ। हिंदी के समकालीन परिदृश्य में बहुचर्चित कथाकार सुदर्शन भाटिया नर-नारी के अंतर मन में अवगाहन करके ऐसी मानवीय संवेदनाओं का चित्रण करते हैं, जो सार्वभौमिक हैं, तथा सर्वकालीन भी। प्रेम एक ऐसी प्रवृत्ति है, जो अनन्तकाल से मनुष्य जीवन को संचालित करती आ रही है। सुलगती बर्फ में अलग-अलग पात्रों के माध्यम से प्रेम की अन्विति दिखाई गई है। इतना अवश्य है, कि कथा संयोजन में अप्रत्याशित घटनाओं के समावेश से जीवन की अनिश्चितता एवं परस्पर निर्सरता का संशय और प्रगाढ हो जाता है। लेकिन ऐसा करने से घटनाओं की रोचकता बढ़ जाती है।

उपन्यास अन्तरमन की तरंगों को रूपायित करते हुए जीवन की विसंगतियों का यथार्थ परक चित्रण तो प्रस्तुत करता ही है। साथ ही अनपेक्षित स्थितियों की आहट को भी कलात्मक सौष्ठव के साथ समंजित करता है। प्रेम की परिणति विवाह से होती है। तथा सुखान्त जीवनदर्शन आस्थावादी स्वर का आभास देता है। सुमन, पुष्पा आदि महिला पात्र अपनी उपस्थिति ही स्थिर नहीं करते, बल्कि विशिष्ठ भंगिमाओं को रेखांकित भी करती है।

'सुलगती बर्फ' एक अर्थपूर्ण सामाजिक विसंगतियों एवं आस्थाओं को चित्रित करनेवाला रोचक, संग्रहणीय उपन्यास है।[1]

सुदर्शन भाटिया द्वारा रचित 'सुलगती बर्फ' सामाजिक उपन्यास की कथा आरंभ से लेकर अंत तक रोचक तो है ही, जिज्ञासा भी बनाए हुए है। पहाडी क्षेत्र जोगिन्दर नगर से जिस गाडी में एक नई नवेली अति सुंदर युवती 'पुष्पा' यात्रा कर रही है, उसी गाडी में एक हैंडसम युवक था। उसका वर्णन लेखक ने इस प्रकार किया है - ''नौजवान का शरीर हष्ट-पुष्ट, आँखें सुंदर एवं मोटी थी। भौंहे भूरे रंग की, सिर-पर घुँघराले बाल, वेशभूषा और आयु से आधुनिक युवक खूब आकर्षक लग रहा था। वह चेहरे के भावों से गंभीर, पुरातन संस्कृति प्रिय, साहित्य का उपासक और त्याग का प्रतीक लग रहा था।''[2] पुष्पा उस युवक को एकाटक देखने लगी। उसे लगा कि युवक उससे परिचित है। उसे बहुत सोचने पर याद आया कि वह ''युवक 'आसमान

---

1. डॉ. सुशीलकुमार फुल्ल - पुष्पांजलि, रामपुर (पालमपुर), पृ.
2. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ. 12.

का तारा' नामक फिल्म का हीरो था।''[1] युवक ने भी पुष्पा की ओर देखा और वह उसके पास जाकर बैठ गया। युवक ने पुष्पा से पूछा कि वह उसको इतनी देर से क्या देख रही थी। लेकिन पुष्पा ने उसका उत्तर नहीं दिया। लेकिन युवक ने एक-दो बार पूछने पर पुष्पाने कहा कि, ''क्या आप फिल्मी हीरो है ? तब युवक कहता है कि मैं कभी हीरो था, अब नहीं।''[2] फिर दोनों अपना परिचय देते है। युवक कहता है मेरा नाम 'गिरीश' है। उसने कहा कि मुझे फिल्मी जीवन से नफरत है। क्योंकि वहाँ कोई किसी की अस्मत लूट लेना, शील भंग कर देना। यह सब मैंने अपनी आँखों से देखा है। और यह देखकर ही मैंने फिल्मी दुनिया छोड दी।

गिरीश और पुष्पा दोनों एक दूसरे के साथ इतने घुल-मिल गए कि, जैसे उनकी पुरानी जान-पहचान हो, और उन दोनों को एक-दूसरे से प्रेम हो जाता है। पुष्पा का स्टेशन आते ही वह उतरती है। पुष्पा उसे अपने पिताजी से मिलने को कहती है। लेकिन गिरीश कहता है, कि उसे कल दिल्ली 'निराला' जी की जयंती में भाग लेना है। और वह चला जाता है।

दिल्ली में निराला जी की जयंती समारोह बडे ही आनंदमय, उत्साहपूर्ण वातावरण में चल रहा था। वहाँ निराला जी के कविताओं को पढ़कर उनको श्रद्धांजली अर्पित की। बाद में प्रत्येक कवि ने अपनी अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। गिरीश ने भी अपनी कविताएँ सुनाई। तब लोगों ने उसकी बहुत तारीफ की। गिरीश का कविता कहने का आकर्षक अंदाज ने उसको उस दिन 'कविराज' की उपाधि से सम्मानित किया गया। वहाँ उसकी मुलाकात अटल जी से होती है। अटल जी जाने-माने कवि थे। गिरीश को देखकर उन्हें अपनी बेटी 'सुमन' के लिए एक अच्छा वर मिल गया, इससे खुशी हुई। उन्होंने गिरीश को अपने घर निमंत्रित किया, लेकिन भाग्य से उनकी बेटी सुमन को ही गिरीश मिल गया।

गिरीश जब रास्ते पर चल रहा था, तब वह एक गडढे में गिरता हैं, उसे चोंट आती है। वहाँ सुमन अपने घर उसे लाती है और उसके जख्म पर मरहम लगाती है। सुमन गिरीश को भाई के रूप में पाकर बहुत खुश हुई। गिरीश भी सुमन जैसी बहन पाकर धन्य हुआ। जब कि अटलजी सुमन का हाथ गिरीश को देने का विचार बना चुके थे। गिरीश ने इस परिवार के केवल मात्र इन दो सदस्यों को अत्यंत प्रभावित किया। तीसरा सदस्य तो कोई था ही नहीं। दिल्ली जालंधर में

---

1. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ. 14.
2. वही, पृ. 14.

अटलजी की अथाह संपत्ति थी। होनेवाले दामाद को ही सब मिलना था। गिरीश भी एक सेठ के घर का पुत्र था।

उधर पठानकोट में गिरीश के पिता को अपने पुत्र के लिए रिश्ता तय करना था। उनका दबदबा इतना था कि गिरीश अपने पुष्पा से बने सम्बन्धों का भेद नहीं खोल पाया और विवाह से इनकार करता रहा। पिता का दबाव बढ़ जाने पर पुत्रने विवाह के लिए 'हाँ' तो भर दी, मगर पुष्पा ही चाहिए यह बात नहीं कह सका।

''एक दिन गिरीश पुष्पा को मिलने जालंधर पहुँचा। जोगिंदर नगर से जसूर तक की यात्रा तथा सुखद अनुभूतियों में दोनों खुश तो थे, मगर बीच में कोई संपर्क भी नहीं कर पाए। पुष्पा अपने मित्र गिरीश के बिना उदास और फिर बीमार रहने लगी। उसे सहारा मिलता गिरीश की अखबारों में छपी कविताओं का। गिरीश पुष्पा के घर पर उसकी बीमारी में मिला जरूर मगर अभी विवाह का टाँपिक नहीं छेड गया।''[1]

''जालंधर में ही गिरीश का पुराना मित्र सतीश भी मिल गया। दोनों एक दूसरे कं कभी लंगोटिया यार थे। एक-दूसरे को राजदार। दोनों पठानकोट गए और गिरीश ने अपने प्यार तथा पिताजी के सख्त स्वभाव की बात बताई।''[2]

अभी ये लोग जालंधर में ही थे कि दिल्ली से अटलजी पठाणकोट पहुँच गए। और सुमन तथा गिरीश का रिश्ता पक्का कर आए। जब सतीश ने गिरीश की पुष्पा के प्रति वकालत की तो पिताजी ने साफ कह दिया, ''विवाह होगा तो सुमन से ..... गिरीश कौन होता है मना करने वाला।''[3] और विवाह की तैयारियाँ भी शुरू हो गई। जब पिता को पुष्पा की ओर झुकाव का पता चला और गिरीश ने सुमन से विवाह नहीं करने की बात पर जिद पकडी तो पिताजी बीमार पड गए। अंत में गिरीश को पुष्पा की बजाए सुमन से विवाह करने की ही स्वीकृति देनी पडी। तब पिताजी खुश हुए।

गिरीश को भी पिता की हठ के आगे आत्मसमर्पण मजबूरन करना ही पडता है। सतीश का व्यावहारिक सुझाव है - ''इस विवाह के लिए तुम्हें अपने सपनों की बलि देनी होगी। फैसला

---

1. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ. 73.
2. वही, पृ. 86
3. वही, पृ. 95

बदलना होगा। प्यार का गला घोंटना होगा। यह सब कुछ करके यदि अपने पिता का जीवन बचा सको तो भी यह सौदा महँगा नहीं।''[1]

घटनाक्रम में अप्रत्याक्षित नाटकीय मोड आता है जब लालाजी गिरीश को उनकी दूसरी पत्नी से पैदा बेटी के बारे में बताते हैं कि अगर ''उसकी बहन विवाह के शुभ अवसर पर होती तो समस्त दायित्वों को सँभाल लेती। उसकी कमी महसूस हो रही है।'' गिरीश इस नए घटना क्रम से हतप्रभ है, लेकिन उसके प्रयासों से वह भेद खुलता है कि सुमन ही गिरीश की खोई हुई बहन है। स्थितियाँ सही पटरी पर आने लगती है। गिरीश के अनुरोध पर सतीश सुमन से विवाह करने की स्वीकृति देता है। अब गिरीश और पुष्पा के मिलन की राह के समस्त अवरोधक दूर हो जाते है। गिरीश के पिता भी स्थितिगत बदलाव के तहत दोनों के विवाह को सहमत है। लेकिन पुष्पा का आक्रोश सातवें आसमान पर है - ''उसने उसे दोबारा धोखा दिया है। क्या इतना काफी नहीं। प्यार यहाँ। शादी वहाँ। मैं उसके प्यार में सुलगती बर्फ-सी पडी हूँ। हरजाई कहीं का ! फरेबी! बना फिरता है आदर्शवादी। कविराज-धोखेबाज-मैं अब उसकी शक्ल देखने को तैयार नहीं।''[3]

''पश्चाताप स्वरूप अटलजी पुष्पा के माँ-बाप के पास गिरीश का रिश्ता लेकर जाते हैं और चाहते हैं कि सतीश और सुमन के साथ-साथ गिरीश व पुष्पा और सुमन के साथ-साथ गिरीश व पुष्पा का विवाह भी एक ही मंडप तले हो। पुष्पा सारी वस्तुस्थिति से अवगत होती है, तो आक्रोश ठंडा हो जाता है। परिवार के दो अनुभव पके बुजुर्ग अपने बच्चों के मन के भावों को सहीं समय पर पहचान न पाए जो पुरानी व नई पीढी के वैचारिक असंतुलन का परिचायक है। लेकिन इस बात का हार्दिक दुख तो था लेकिन देर सवेर गाडी सही रास्ते पर आ गयी यही उन्हें खुशी थी। बिना दहेज विवाह संपन्न हुए। गिरीश के प्रयत्नों तथा सतीश के सहयोग से कार्य संपन्न हो रहा था। गिरीश के कारण लालाजी सही रास्ते पर आए। तथा एक घोर पाप से बच गए - वर्ना सगे भाई-बहन ही पति-पत्नी बन जाते।''[4]

''गिरीश और पुष्पा एक-दूसरे के होना चाहते थे, हुए भी। सुमन के लिए गिरीश भाई था और वैसा सिद्ध भी हो गया। धन्ना ने अपने मामा की अनाथ बेटी का विवाह कर स्वर्गीय

---

1. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ. 105.
2. वही, पृ. 121.
3. वही, पृ. 128
4. वही, पृ. 131.

मामा की आत्मा को शांति पहुँचाई। बीच में कुछ ऐसी छोटी घटनाएँ भी आई, जिनसे गिरीश की प्रखर बुद्धि का परिचय मिलता रहा। सुलगती बर्फ-सी पुष्पा भी मनभावन साथी को अन्ततः पा गई। यह उसकी अपार धैर्यशीलता और तपस्या का प्रतिफल था।''[1]

इस प्रकार विवेच्य उपन्यास में प्रेम एवं विवाह को चित्रित कर लेखक ने बिना दहेज विवाह का समर्थन किया है।

2.3 आलोच्य उपन्यासों की कथावस्तु की समीक्षा :

2.3.1 'कल्लो' उपन्यास की कथावस्तु की समीक्षा :- 'कल्लो' उपन्यास सुदर्शन भाटिया जी का ग्रामीण जीवन से जुडा उपन्यास है। इस उपन्यास में लेखक ने ग्राम सुधार करना यह मूल उद्देश्य सामने रखकर ही इस उपन्यास की निर्मिति की है। उसमें लेखक को कुछ हद तक सफलता मिली है। 'कल्लो' का कथानक इतना कमजोर है कि यह उपन्यास कम और किसी फिल्म की कहानी ज्यादा प्रतीत होता है।

पात्र तथा चरित्र-चित्रण की दृष्टि से भी उपन्यास के पात्रों की भूमिका पाठकों पर कोई विशेष प्रभाव नहीं डाल सकती हैं। उपन्यास की नायिका 'कल्लो' जो एक भोली-भाली तथा सीधी ग्रामीण लड़की के रूप में दिखाई गई है, उसके चित्रण में भी उपन्यासकार ने कोई विशेष सफलता हासिल नहीं की है। कल्लो में नायिका के जो गुण होते हैं, वह उसमें दिखाई नहीं देते। वह बहुत ही भोली तथा नटखट दिखाई गई है। उपन्यास का नायक युवक भी एक सुशिक्षित, पढा-लिखा दिखाया गया है। वह समाजसेवक कम और कली के प्यार में अंधा ज्यादा दिखाई देता है। इसीतरह अन्य पात्र कैलाश, चौधरी, शीला और राजेश के पात्र चित्रण में भी उपन्यासकार लगभग असफल ही रहा है।

'कल्लो' की संवाद योजना से उपन्यास किस स्तर का है यह पता चलता है। 'कल्लो' के संवाद ग्रामीण भाषा में है। तथा उपन्यास के अन्य शिक्षित पात्रों के संवादों में अंग्रेजी भाषा का समावेश दिखाई देता है। जैसे शीला, राजेश, कैलाश आदि पात्र सुशिक्षित दर्शाए गए है। इस प्रकार संवाद की दृष्टि से यह एक सफल उपन्यास है।

---

1. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ. 132.

देशकाल और वातावरण की दृष्टि से 'कल्लो' में हिमाचल प्रदेश की पर्वतांचल के ग्रामीण जीवन की झाँकी प्रस्तुत करने में उपन्यासकार ने सफलता जरूर हासिल की है। ग्रामीण लोगों की मानसिकता को यहाँ सही ढंग से दर्शाया गया है। ग्रामीण लोग जहाँ भोले-भाले होते हैं, वहीं संकीर्ण मानसिकतावाले भी होते हैं।

जहाँ तक उपन्यास की भाषा शैली का सवाल है, तो उसे केवल सरल ही कहा जा सकता है। सरल भाषा ही जनमानस की भाषा हैं। उपन्यास में कहीं भी जटिल भाषा का प्रयोग नहीं है। इस प्रकार भाषा शैली दृष्टि से यह सफल उपन्यास है।

उद्देश्य की दृष्टि से उपन्यासकार का उद्देश्य ग्राम सुधार करना है। युवक के द्वारा यह काम उपन्यासकार ने किया है। इसप्रकार लेखक का उद्देश्य कुछ हद तक सफल होता हुआ प्रतीत होता है।

इस प्रकार 'कल्लो' इस सामाजिक उपन्यास में उपन्यास के लिए जो तत्व आवश्यक होते है, उन तत्वों में से कुछ तत्व ही इसमें प्रतीत होते दिखाई देते है। उपन्यासकार ने पाठकों को एक नई प्रतिकृति देने का प्रयास किया है, जो काफी हद तक सफल हुई है।

2.3.2 'सुलगती बर्फ' उपन्यास की कथावस्तु की समीक्षा :- 'सुलगती बर्फ' सुदर्शन भाटिया जी का दूसरा सामाजिक उपन्यास हैं। इस उपन्यास में लेखक का मूल उद्देश्य प्रेम और जीवन संघर्ष है। जो अत्यंत रोचक है। उपन्यास की शुरूआत उपन्यास की नायिका पुष्पा और नायक गिरीश के भेंट से होती है। उनकी मुलाकात रेल में होती है और जीवनभर साथ रहने का वचन देते है। यहाँ पर पहली ही मुलाकात में एक-दूसरे के प्रेम में पडना, फिर जीवनभर साथ रहने का वचन देना यह कुछ अजीब प्रतीत होता है। इस प्रकार उपन्यास की शुरूआत कुछ नाटकीय प्रतीत होती है।

पात्र तथा चरित्र चित्रण की दृष्टि से यह उपन्यास सफलता प्राप्त किए हुए है। प्रमुख पात्र गिरीश जो स्वभावत: कवि है, इसलिए उपन्यास में अनेक पन्नों पर साहित्य का अधिपत्य है। जिससे उपन्यास अधिक आकर्षण प्रदान करता है। इसमें भारतीय संस्कृति की झलक साफ-साफ दिखाई देती है। उपन्यास में ज्यादातर पात्र पढ़े लिखे होने के कारण उनमें अँग्रेजी भाषा का ज्यादा प्रभाव दिखाई देता है। गिरीश और पुष्पा के संवादों में ज्यादातर शब्द अँग्रेजी के मिलते हैं। इसप्रकार चरित्र-चित्रण तथा संवाद की दृष्टि में यह उपन्यास काफी सफल हुआ है।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

देशकाल और वातावरण का इस उपन्यास में काफी प्रभाव है। इसमें ग्रामीण परिवेश के साथ-साथ नागरी परिवेश का भी सुंदर वर्णन किया हुआ मिलता है। दिल्ली, जालंधर, पठानकोट जैसे बड़े-बड़े शहरों का परिवेश इस उपन्यास में चित्रित किया गया है।

भाषाशैली की दृष्टि से यह उपन्यास काफी सरल है। उपन्यास की भाषा सहज सरल और अत्यंत शीघ्रता से समझ में आनेवाली है। उपन्यास का नायक कवि होने के कारण उसकी भाषाशैली में साहित्यिक भाषा का प्रभाव दिखाई देता है। तथा उपन्यास के सभी पात्र शिक्षित होने के कारण उनमें नागरी भाषा की छाप दिखाई देती है।

'सुलगती बर्फ' उपन्यास का उद्देश्य प्रेम और जीवनसंघर्ष है। इस उद्देश्य की कसौटी पर उपन्यास का नायक गिरीश और नायिका पुष्पा खरे उतरते हुए दिखाई देते है। इससे स्पष्ट होता है, कि उपन्यास का उद्देश्य सफल हुआ है। इस प्रकार 'सुलगती बर्फ' यह एक सफल उपन्यास है।

निष्कर्ष :-

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है, कि समाजवादी लेखक सुदर्शन भाटिया जी ने 'कल्लो' उपन्यास में अनेक ग्रामीण समस्याओं को उठाया है। इसमें ग्रामीण परिवेश में घटित घटनाओं का चित्रण मिलता है। उपन्यास की नायिका 'क़ली' (कल्लो) एक सीधी-साधी ग्राम में पली लड़की है। वह युवक से प्रेम करती हैं, लेकिन युवक कहता है - 'मैं तो बहता पानी हूँ, तुम्हें अपने साथ नहीं ले जा सकता। लेकिन फिर भी कल्लो युवक के ही साथ रहना चाहती है। युवक गाँव-गाँव जाकर समाजसुधार करता है। कल्लो के गाँव में वह सडक बनवाना, बच्चों के लिए स्कूल खुलवाना, अस्पताल की सुविधा तथा डाकखाने की सुविधा भी करता है। इतना ही नहीं वह शहर की गरीब विधवा औरत की सहायता भी करता है। इससे युवक का सेवाभावी गुण दिखाई देता है। इस प्रकार युवक के मन में ग्रामीण लोगों के प्रति गहरी संवेदना दिखाई देती है। उस गाँव में रहकर वह पूरे गाँव का कायापालट कर देता है।

सुदर्शन भाटिया जी द्वारा दूसरा सामाजिक उपन्यास 'सुलगती बर्फ' रोचक तथा जिज्ञासा भरा है। मुख्य कथा में छोटे कथानक या घटनाएँ जुडी है। उपन्यास का नायक गिरीश का गाडी में रोचक, नोकझोंक वाली वार्तालाप तथा समर्पण, दिल्ली में सुमन द्वारा अटलजी के वाचनालय का विवरण, निराला जी के जीवन से जुडी जानकारियाँ, रेल में धन्ना का जेब काटने का असफल

प्रयत्न ऐसे अवसर पर गिरीश तथा अन्य यात्रियों की प्रतिक्रिया, धन्ना की व्यथा-कथा, पिता के सामने नौजवान गिरीश का पुष्पा के प्रति भेद न खोल पाना, एक ही घर से तीन बारातों का पठानकोट से जालंधर पहुँचना, एक ही मंडप में तीन विवाह, लाला माणिकचंद्र का अपनी खोई हुई पुत्री के प्रति स्नेह जागना और फिर कन्यादान करने पहुँच जाना कुल-मिलाकर समाज को एक आदर्श घटनाक्रम इस उपन्यास में मिलता है। इस उपन्यास में एक अच्छे उपन्यास के सभी गुण मिलते है।

पुष्पा का यह समझना की गिरीश अपने विवाह का निमंत्रण देते पहुँचा है, वह बीमार अवस्था में उसका तिरस्कार करते हुए स्वयं को 'सुलगती बर्फ' कह कर दो ही शब्दों में गहरी बात कह जाती है। जो उपन्यास के शीर्षक को भी सार्थक करता है।

विवेच्य दोनों उपन्यासों में 'प्रेम-कथा' जरूर है। किंतु दोनों में चित्रित समस्याएँ अलग-अलग। 'कल्लो' में कल्लो युवक से प्यार करती हुई दिखाई तो है। किंतु दोनों के विवाह को टाल दिया है। युवक एक समाजसेवक के रूप में चित्रित है। अपना घर न बसाते हुए केवल समाजसेवा व्रत लेकर जीवन बिताना नई पीढ़ी को स्वीकृत होगा? युवक, कल्लो एवं कैलाश का प्रेम-त्रिकोण चित्रित करने में लेखक सफल हुए हैं।

'सुलगती बर्फ' में गिरीश और पुष्पा तथा सतीश और सुमन के विवाह की घटना को चित्रित किया है। 'विवाह' की समस्या और उसका समाधान विवेच्य उपन्यास में मिल जाता है। मनुष्य जीवन में विवाह एक महत्त्वपूर्ण संस्कार होता है। इसी संस्कार का चित्रण नाटकीय शैली में करने लेखक सफल हुआ है।

-----x-----